औरत अकेली भी जी सकती है।

मेरा नाम बालो है। मैं भी तुम सबकी तरह एक औरत हूं जिसका जीवन दुख तकलीफ़ों से भरा रहा है। क्या-क्या नहीं सहा मैंने। सिर्फ़ इसलिए कि मेरी गृहस्थी बनी रहे। शायद तुम कहोगी इसमें कौन सी बड़ी बात है। हम सब रोज़ यही सहती हैं। खून के घूंट पीकर चुप रह जाती हैं।

"हां, बस यही फ़र्क है। मैं चुप नहीं रही और आज मेरी ज़िंदगी दुख तकलीफ़ों से आज़ाद है। इसीलिए तो मैं अपनी कहानी तुम सबको सुनाना चाहती हूं।"

धोखे की शादी

मेरा मामा गोपाल का रिश्ता लेकर हमारे घर आया था। लड़का नौकरी करता है। यह सुन मां ने रिश्ता मंजूर कर लिया। मां और मामा दोनों को मालूम था कि गोपाल पहले ही शादीशुदा है। मां ने मेरे सुख-दुख की नहीं सोची। उसने तो सोचा अपने सिर से बोझ उतारूं। आगे जो होगा बालो आप सहेगी।

जब मुझे पता लगा कि ये लोग मुझे सौतन के घर में दे रहे हैं मैंने शादी से इंकार कर दिया। इस पर मामा ने कहा—

"अरी पगली, पहली पत्नी को तो उसने कब का छोड़ दिया। तुझे उसके साथ थोड़े ही रहना है।"

मां भी शादी करने के लिए मुझ पर दबाव डालने लगी। गोपाल ने भी झूठ बोला कि पहली

पत्नी उसके घर पर नहीं रहती।

घर और समाज का दबाव, मदद और सहारे की कमी के कारण मैंने शादी के लिए 'हां' कर दी। और करती भी क्या। हम सब अकेली कितनी असहाय महसूस करती हैं।

नरक़ के दरवाज़े

शादी होते ही मेरे लिए नरक़ के दरवाज़े खुल गए। ससुराल पहुंचकर पता लगा कि मुझे सास और सौतन के साथ रहना है। गोपाल जिस गांव में नौकरी करता था वहां मुझे साथ नहीं ले गया। मैं रात-दिन खेत पर और घर में काम करती। उस पर सास और सौतन दोनों मुझे मारती-पीटतीं।

और गालियां देतीं।

तंग आकर एक दिन मैं गोपाल के गांव चली गई। वहां उसे अपनी पूरी राम कहानी सुनाई। लेकिन उसे जरा भी दया नहीं आई। उसने दोबारा मुझे अपनी मां के पास भेज दिया। इस बीच मेरा गर्भ ठहर गया।

एक तरफ़ पेट में बच्चा, दूसरी तरफ़ कमरतोड़ काम और मार-पीट। मुझे लगता था मैं नहीं बचूंगी। एक बार तो सास ने तीन दिन तक खाना नहीं दिया। मैं भूख से तड़पती रही।

सास और सौतन ने मिल कर मुझे ज़हर पिलाने की कोशिश की। मैंने लड़-झगड़ कर उनके हाथ से शीशी छीन कर दूर फेंक दी। मैंने शोर मचाया तो पड़ौस का देवर आ गया। सब गांववालों ने शीशी देखी। पंचायत बैठी, सबने थू थू की लेकिन मेरी किस्मत का कुछ फ़ैसला नहीं हुआ। सब कहने लगे इस परिवार में तो यह रोज़ का ही किस्सा है।

लापरवाह समाज

कोई चोरी चकारी, धर्म-कर्म या मर्दों की लड़ाई हो तो पंच बीच में पड़ते हैं। जाति और समाज बीच में बोलता है। जब किसी औरत पर अत्याचार हो तो सबको सांप सूंघ जाता है। हर कोई उसे घरेलू मामला कह कर छोड़ देता है। जब पति और परिवार रक्षक के बदले भक्षक बन जाएं तब भी कोई कुछ नहीं बोलता। यही कारण है कि आज भी लाखों औरतें घर के भीतर मारी जा रही हैं।

एक कोशिश और

मैंने एक बार फिर पति के पास जाकर सब सुनाया। उसके स्कूल के हैडमास्टर साहब से भी शिकायत की। सबने उसे समझाया, लेकिन उसे कहां समझ में आती। पेट में पांच महीने का गर्भ होने के बावजूद उसने मुझे खुब बेदर्दी से मारा।

खून से लथ-पथ बेहोश पड़ी थी तो गांव की किसी औरत ने मुझे अस्पताल पहुंचा दिया। जब पुलिस ने जांच पड़ताल की तो गोपाल ने डरा धमका कर मुझसे झूठ बुलवाया कि "मैं सीढ़ियों से गिर पड़ी थी।"

और क्या-क्या जुल्म हुए क्या बताऊं बहनों। जचकी के दर्दों के बीच मुझे मायके भेज दिया। यहां तक कि घर पहुंचते ही बच्चा हो गया। सब कहने लगे ससुराल वाले कैसे कसाई हैं।

पर मदद के लिए कोई आगे न बढ़ा। मां ने भी फिर ससुराल भेज दिया। गेंद की तरह लोगों की लातें खाती। कभी मायके तो कभी ससुराल भेज दी जाती। मेरा अपना कोई और ठिकाना नहीं था जहां मैं हक़ से, बिना किसी डर के रह पाती।।

एक नया जीवन

मरियम नाम की एक औरत ने महिला जागृति केंद्र से मेरा परिचय करा दिया। उन्होंने मेरी बड़ी मदद की। पहले गोपाल को समझाया बुझाया। पुलिस की मदद भी ली। लेकिन जब भी मैंने शांति से उसके साथ रहने की कोशिश की वह मार-पीट करता रहा।

तब मैंने अलग रहने का फ़ैसला कर लिया। मैं घर जाकर अपना पूरा सामान ले आई। किराए पर घर लिया। खुद नौकरी करने लगी। अब घर बना लिया है और दो बच्चे पाल रही हूं। महिला जागृति केंद्र के सदस्यों की मदद से अब मुझ में हिम्मत आ गई है। अब किसी का डर नहीं। एक दूसरे की मदद करके संगठन बना कर ही हम ताक़तवर बन सकती हैं। सिर उठा कर जीना सीख सकती हैं। □